ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-3* Issue-2*March- 2018
Innovation The Research Concept

1990 के बाद की काव्य प्रवृत्तियां

जगदीश चन्द्र जोशी
असिस्टेंट प्रोफेसर,
हिन्दी विभाग,
रा0स्ना0 महाविद्यालय,
लोहाघाट, चम्पावत

सारांश

सन् 1990 के बाद भारतीय राजनीतिक परिदृश्य में परिवर्तन आया। नेहरू माडल के अन्त और पूँजीवाद के उदय के फलस्वरूप गाँवों से पलायन तथा शहरों के अनियंत्रित तरह से बसने का आम जनमानस में प्रभाव पड़ा। बकौल एजाज अहमद ''भूमण्डलीकरण की तकनीकें अति आक्रामक हैं और जिस तरह से ये हमारे घरों में घुसी हैं, उपनिवेशवाद कभी नहीं घुसा।''

प्रकृति के साथ तादात्म्य स्थापित करते हुए आलोक धन्वा जीवन में प्रवेश करते हैं। चन्द्रकान्त देवताले 1990 के बाद भारतीय समाज में आये बदलावों और जनपक्ष की गूँज को दिखाते हैं। रश्मि रमानी और अनामिका शिव की कविताएं आधी दुनिया की पीड़ा को व्यक्त करती हैं।

1990 के बाद कवियों की रचनाओं में आम आदमी, मध्यवर्ग, कृषक, मजदूर समाज, स्त्री समाज, दलित समाज, बाजारवाद एवं आप्रवासी समाज उभरकर आया है।

मुख्य शब्द : भूमण्डलीकरण, उपनिवेशवाद, लोकधर्मी, ऊर्जस्वी, सुदीर्घ, काव्यांकित, नारी अस्मिता।

प्रस्तावना

सन् 1990 के बाद भारतीय राजनीतिक परिदृश्य में बदलाव आया। नेहरू माडल का अवसान हो गया। भूमण्डलीकरण का दौर चल पड़ा। पूँजीवाद के साथ भ्रष्टाचार भी अपना रंग दिखाने लगा। सत्ता प्रतिष्ठान भ्रष्टाचार की आड़ में झुलसने लगे। भूमण्डलीकरण के इस दौर में गाँव के गाँव उजड़ने लगे और शहरों में बेरहम तरीके से लगातार बस्तियां बसने लगी। सरकारें जनता का ध्यान भ्रष्टाचार से भटकाने के लिए सीमापार आतंकवाद या युद्ध के काल्पनिक भय का सहारा लेती रही हैं।

अध्ययन का उद्देश्य

सन् 1990 के बाद समकालीन हिन्दी कविता को नये आयाम देने वाले प्रमुख कवियों में रवीन्द्र भारती, महेश पुनेठा, नीलाभ, हरीश चन्द्र पाण्डेय, निर्मल कुमार चक्रवर्ती, मिथिलेश श्रीवास्तव आदि के रचना कर्म के प्रति जिज्ञासा पैदा करना और आलोक धन्वा, लीलाधर जगूड़ी, चन्द्रकान्त देवताले, रश्मि रमानी तथा अनामिका शिव के कविता कौशल को प्रकाश में लाना प्रमुख उद्देश्य रहा है। 'अनामिका शिव' की आधी आबादी की चिन्ता को प्रस्तुत करना, इस समाज के प्रति न्याय करना जैसा है।

कवि लीलाधर जगूड़ी कहते हैं–

''जब दुनिया का ध्यान लड़ाईं की तरफ हो।
तो बच्चों का ध्यान पढ़ाई की तरफ कैसे हो।।'' [1]

नेहरू युग के अन्त के बाद पूँजीवादी विकास का माडल देश में प्रभावीरुप से लागू किया गया। आर्थिक विकास के नाम पर जो अव्यवस्था और विषमता समाज में पैदा हुई उसी के परिणाम स्वरुप 1980 के दशक में हुए विभिन्न जनान्दोलन इसके सबूत है

एजाज अहमद के अनुसार ''भूमण्डलीकरण की तकनीकें अतिआक्रामक हैं और जिस तरह से ये हमारे घरों में घुसी हैं, उपनिवेशवाद कभी नहीं घुसा।''[2]

आलोक धन्वा की कविताओं में प्रकृति अपने सौन्दर्यमयी परिवेश के साथ जीवन में समाहित हो जाती है। 'पगडण्डी' कविता का एक उदाहरण इसका जीता–जागता प्रमाण है–

''वहाँ घने पेड़ हैं
उनमें पगडण्डियां जाती हैं
जरा आगे ढलान शुरू होती है
जो उतरती है नदी के किनारे तक
वहाँ स्त्रियाँ हैं
घास काटती जाती हैं

आपस में बातें करते हुए
घने पेड़ों के बीच से ही उनकी
बतचीत सुनाई पड़ने लगती है।''[3]

प्रकृति चित्रण करते हुए कवि आलोक धन्वा जीवन में प्रवेश करते हुए मानवीय गतिविधियों की ओर संकेत करते हैं।

''लेकिन चरवाहे कही नहीं दिखे
सो रहे होंगे
किसी पीपल की छाया में
यह सुख उन्हें ही नसीब है।''[4]

''समकालीन कविता हमारे अपने काल की कविता है।........................समाज में अक्सर काल निरपेक्ष स्थितियाँ बलवती रहती हैं। काल को पलटकर उसे जड़वत करने के तरीके उसके पास होते हैं। प्रायः ऐसा भी होता है कि काल का एक जड़ रुप पूरे वर्चस्व के साथ व्यापित होता है और सच का आभास देता रहता है।''[5]

''चन्द्रकान्त देवताले की कविता 'अब उसी वक्त' में (समकालीन भारतीय साहित्य जुलाई–सितम्बर 1990) समय में आये बदलाव के साथ स्थितियों के बदलाव को दिखाया गया है। उस बदलाव में देवताले सामान्य प्रसंगों को छेड़ते हैं और उसकी सहजता को असहजता में परिणत करके कविता अग्रसर होती है। देवताले की यह कविता जीवन के केन्द्र की और बढ़कर अपना जनचरित्री एहसास देती है।

मुझे याद है दिया–बत्ती के वक्त
माँ के साथ प्रार्थना के लिए खड़ा हो जाता था
अब उसी वक्त घरों में भून दिया जाता है
औरतों और बच्चों को।''[6]

1990 के बाद तरह–तरह की कविताएं लिखी गई। डॉ0 नामवर सिंह कहते हैं–

''कविता की दूसरी परम्परा वह है, जो लोकधर्मी है। यह लोकधर्मी काव्य–परम्परा जितनी ऊर्जस्वी है उतनी सुदीर्घ भी।''[7]

कुछ समय पहले तक जिस वसुधैव कुटुम्बकम की बात की जाती थी वह अब अर्थ केन्द्रित कुटम्ब की बात हो गई है। विश्व अब एक बाजार की तरह है। बाजार तलाशता है, बाजार निहारता है। ऐसे में आर्थिक विकृतियों का अन्तर्राष्ट्रीयकरण होना ही असामान्य नहीं है।

अभाव, गरीबी, पलायन नारी के जीवन को कितना विकराल बना देते हैं यह रश्मि रमानी 'कहानी की तलाश' कविता में कहती हैं–

''एक आश्चर्यलोक में
दौड़ती रहेगी वह
और
वह औरत
खुद भटक रही है
आश्चर्यलोक में
नींद लाने के लिए
तलाश है
उसे भी
एक कहानी की।''[8]

''अनामिका शिव की कविता का तेवर किंचित तेज है। वह अपने में पुरूष–विरोधी बिम्ब भी अख्तियार करती है और अभिसप्तता के स्वर को बुलन्द भी करती है। स्त्री कविता का यह भी एक पक्ष है। 'और कोई नाम दो' (साक्षात्कार जून 1992) शीर्षक यह कविता समकालीन सच को काव्यांकित भी करती है–

''मेरा नाम
वेदना
घुटन
गुलामी
करूणा
कलाली की हाँडी
भी हो सकता था।
एक रिवाज
या
जूती किसी मर्दाने पाँव की
खरीद और बिक्री
कुछ भी हो सकता है मेरा नाम।''[9]

नारी आस्मिता को वर्तमान उपभोगवादी संस्कृति ने विकृत कर दिया है। फलस्वरुप अनामिका शिव की लेखनी के तेवर तीखे हो गये हैं।

समकालीन हिन्दी कविता को नीलाभ, रवीन्द्रभारती, हरीशचन्द्र पाण्डेय, निर्मल कुमार चक्रवर्ती, मिथिलेश श्रीवास्तव, निलम उपाध्याय, एकान्त श्रीवास्तव, महेश चन्द्र पुनेठा, बोधिसत्व आदि कवियों ने एक नई ऊचाई तक पहुँचाया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *भय भी शक्ति देता है–लीलाधर जगूड़ी (राजकमल प्रकाशन) पृ0सं0– 122*
2. *संस्कृति और भू–मण्डलीकरण, आलोचना– एजाज अहमद (जुलाई–सितम्बर 2001)*
3. *दुनियां रोज बनती है– आलोक धन्वा, राजकमल प्रका0 1998 पृ0सं0– 83*
4. *दुनियां रोज बनती है– आलोक धन्वा, राजकमल प्रका0 1998 पृ0सं0– 11*
5. *समकालीन हिन्दी कविता–ए0 अरविन्दाक्षन, राधाकृष्ण प्रकाशन दिल्ली पृ0सं0– 57*
6. *समकालीन हिन्दी कविता–ए0 अरविन्दाक्षन, राधाकृष्ण प्रकाशन दिल्ली पृ0सं0– 85*
7. *कविता की जमीन और जमीन की कविता– नामवर सिंह (राजकमल प्रकाशन) पृ0सं0– 19*
8. *समकालीन हिन्दी कविता – ए0 अरविन्दाक्षन, राधाकृष्ण प्रकाशन पृ0सं0– 132*
9. *समकालीन हिन्दी कविता – ए0 अरविन्दाक्षन, राधाकृष्ण प्रकाशन पृ0सं0– 132, 133*